नव सृजन :काशी मरणान्मुक्ति

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांचि, अवंतिका, पुरी, सप्तपुरी मोक्षदायिका। इन सात मुक्तिधामों में से एक 'काशी' में मुक्ति की अवधारणा का अलौकिकतापूर्ण दर्शन कराता है उपन्यास 'काशी मरणान्मुक्ति' □

शिव ऊं साईं प्रकाशन इंदौर से प्रकाशित इस उपन्यास के लेखक हैं मनोज ठक्कर व रश्मि छाजेड़ जिन्होंने श्मशान में छोड़े गये एक शिशु की जीवन यात्रा के माध्यम से काशी अर्थात् वाराणसी की आध्यात्मिक यात्रा व उसमें व्याप्त शिव तत्व को जिस प्रकार कथानक के साथ उकेरा है, वह नि:संदेह अद्भुत है।

प्रत्येक अध्याय का प्रारंभ शिव महिमा व अंत "पर याद रख मैं तेरा गुरू नहीं" के साथ करना ये दर्शाता है कि लौकिकता से अलौकिकता की ओर चलते हुये किस प्रकार उपन्यास के नायक की भांति स्वयं के भीतर बैठे शिव से अपने गुरू के साथ एकात्म हुआ जा सकता है।

नायक के माध्यम से काशी के श्मशान, वहां विचरते शिव, उनके द्वारा शव के कान में फूंके जाने वाले तारक मंत्र जहां मृत्यु को भी कैसे जिया जाये, इसकी प्रेरणा देते हैं वहीं पूरे उपन्यास की आधारशिला के रूप में नायक का चांडाल बनना और उसका नाम महामृणंगम रखा जाना जिसका कि प्रथम शब्द ही चांडाल की उपाधि 'महा' है लेखकद्वय की कल्पनाशक्ति को दर्शाता है कि क्यों उन्होंने शिव महिमा के इस गान के लिए एक वणिक व ब्राह्मणी के पुत्र को पहले चांडाल बनाया फिर महान संत।

किसी उपन्यास की सार्थकता के लिए जिस पठनीय सहजता की आवश्यकता होती है कि वह अपने मूल विषय के साथ छेड़छाड़ किये बिना ही उसे सामाजिक तानेबाने के साथ बुनता चले वो यहां उपलब्ध रही। जैसे कि श्मशान से प्राप्त शिशु के लिए यशोदा मां का फाफामऊ कस्बे से पलायन कर काशी आ जाना, काल भैरव लाट का दंगों में ध्वस्त होने की कथा सुनाते हुये इस्माइल का दु:ख, बुनकरों की दशा और चांडाल को अस्पृश्य मानने वाली प्रवृत्ति का उपन्यास में कहानी के साथ साथ चलना ।

लेखकद्वय ने आध्यात्मिकता और समाज, सांसारिकता और संत होने के बीच कबीर, तुलसी, बुद्ध, गुरू औघड़ के माध्यम से नायक महा को सामने रखकर जिस तरह कथानक को पिरोया है वह उपन्यास की भाषागत क्लिष्टता के बाद भी पाठक का शिव से साक्षात्कार कराने में सक्षम है।

उपन्यास की भाषा यदि अपेक्षाकृत सरल होती तो पाठकों को बीच बीच में होने वाली बोझिल अनुभूति से बचा जा सकता था। आधुनिक साहित्य की लीपापोती वाली भीड़ के बीच यह एक उत्कृष्ट कृति है।

-अलकनंदा सिंह

उपन्यास - काशी मरणान्मुक्ति
लेखक - मनोज ठक्कर,रश्मि छाजेड़
मूल्य - 360 रुपये
प्रकाशन -शिव ऊं साईं प्रकाशन,
23-24 धेनु मार्केट,
1st फ्लोर श्री कृष्ण चैंबर्स,
इंदौर,भारत।
Telephone: +91 731 4225754, 2530217
ई-मेल : info@shivomsai.com